कम्बल बैंक का उद्घाटन कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

'आओ साथ चलें' संस्था एक लंबे समय से दिल्ली के हॉस्पिटल्स में तथा कोटपूतली व राजस्थान के अन्य गांवों के अन्दर लोगों के जीवन को बेहतर करने के लिए लगातार काम कर रही है। यह संस्था आरएमएल हॉस्पिटल के अन्दर मरीजों तथा मरीजों के अटेंडेंट्स के लिए लंबे समय से भोजन के पैकट देने का काम कर रही है। इस ठिठुरती ठंड के अंदर दिल्ली का तापमान सबसे नीचे रहता है और उस समय कई मरीजों के साथ अटेंडेंट्स को अचानक इमरजेंसी में आना पड़ता है तो पहले उन अटेंडेंट्स के लिए ओढ़ने और बिछाने की व्यवस्था नहीं होती थी, लेकिन 'आओ साथ चलें' संस्था ने दर्द को समझा और उन्होंने उन अटेंडेंट्स के लिए, जो बाहर कहीं भी सोकर रात गुजारते थे, उनके लिए कम्बल की व्यवस्था की।

दिल्ली में जहां-जहां भी उनको लगता है कि खुले आकाश में कोई सो रहा है तो खुले आकाश में सोने वाले उस व्यक्ति को कम्बल और रजाई बाँटकर उसको ठंड से बचाने का काम यह संस्था लगातार कर रही है। आप देखेंगे कि दिल्ली या दिल्ली के अन्य शहरों में ठंड के कारण कई लोग बीमार हो जाते हैं और कई लोगों की मौत हो जाती है। यहां लोगों में सेवा की भावना होने के कारण ऐसी संस्थाएं जहां भी देखती हैं कि खुले आकाश में कोई सो रहा है तो उनको वे कम्बल, रजाई तथा भोजन देने की व्यवस्था करती हैं।

इसी तरीके से चाहे दिल्ली हो, चाहे कोटपूतली हो या राजस्थान के अलग-अलग हिस्से हों, इस संस्था के पदाधिकारियों ने पुण्य का काम किया है। इसी के साथ-साथ कोटपूतली के अन्दर, राजस्थान के अन्य हिस्सों के अन्दर या अन्य राज्यों के अन्दर वस्त्र भण्डार खोलकर लोगों को वस्त्र उपलब्ध कराने का काम तथा ऐसे कई सारे सामाजिक कार्य 'आओ साथ चलें' संस्था कर रही है। मैं इसके लिए इनको बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ।

जिस तरीके से कोविड के समय में पूरे देश की सामाजिक संस्थाओं ने तथा सामाजिक क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्तियों ने अभावग्रस्त लोगों की मदद की थी, उसी तरह ही दिल्ली के लिए भी हमारा संकल्प होना चाहिए कि कोई भी व्यक्ति जो खुले आकाश में सो रहा है, उसको ठंड से बचाने की व्यवस्था करेंगे। इसी तरीके से हम हॉस्पिटल्स, रेलवे स्टेशन्स, बस स्टैण्ड तथा जहां-जहां भी लोग देश के अलग-अलग राज्यों से काम करने के लिए आते हैं, मजदूरी करने के लिए आते हैं, उनको रैन बसेरा उपलब्ध कराएं। उसके साथ-साथ उनको ठंड से बचाने की भी व्यवस्था करें।

'आओ साथ चलें' संस्था लोगों को ठंड से बचाने की व्यवस्था भी करती है और भोजन की व्यवस्था भी करती है। मोबाइल वैन पर भोजन उपलब्ध करवाना तथा अगर मजदूर रात को भूखा सोता है तो वह भूखा न सोए, इस संकल्प के साथ 'आओ साथ चलें' संस्था काम कर रही है। मैं इसके लिए सबको बधाई देता हूँ।